Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

डीपाडीह : ऐतिहासिक, पुरातात्त्विक एवं सांस्कृतिक अध्ययन

[1]डॉ. अंजू तिवारी, [2]अभिषेक वर्मा
सी. व्ही. रमन् विश्वविद्यालय,कोटा बिलासपुर

सारांश

डीपाडीह छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजांचल में स्थित एक महत्वपूर्ण प्राचीन पुरातात्त्विक स्थल है, जो अपनी समृद्ध स्थापत्य परंपरा, धार्मिक बहुलता तथा ऐतिहासिक अवशेषों के कारण विशेष महत्व रखता है। यहाँ से प्राप्त मंदिरों के भग्नावशेष, मूर्तियाँ एवं शिलालेख यह संकेत देते हैं कि यह क्षेत्र गुप्तोत्तर काल से प्रारंभिक मध्यकाल के दौरान एक सक्रिय धार्मिक एवं सांस्कृतिक केंद्र रहा है। इस शोध पत्र में डीपाडीह के ऐतिहासिक विकास, पुरातात्त्विक साक्ष्यों, स्थापत्य विशेषताओं तथा धार्मिक-सांस्कृतिक भूमिका का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों, पुरातात्त्विक रिपोर्टों एवं ऐतिहासिक ग्रंथों पर आधारित है। शोध के निष्कर्ष यह स्पष्ट करते हैं कि डीपाडीह न केवल एक धार्मिक स्थल था, बल्कि तत्कालीन समाज की सांस्कृतिक चेतना और कलात्मक अभिव्यक्ति का भी महत्वपूर्ण केंद्र रहा है।

मुख्य शब्द : डीपाडीह, छत्तीसगढ़, पुरातत्व, स्थापत्य कला, शैव परंपरा, मध्यकालीन भारत

प्रस्तावना

भारत की प्राचीन सभ्यता को समझने में पुरातात्त्विक स्थलों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। ऐसे स्थल न केवल अतीत की भौतिक संरचनाओं को सुरक्षित रखते हैं, बल्कि उस काल के सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन की भी जानकारी प्रदान करते हैं। छत्तीसगढ़ राज्य अपनी भौगोलिक विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। इसी संदर्भ में सरगुजांचल में स्थित डीपाडीह एक ऐसा पुरातात्त्विक स्थल है, जिसने इतिहासकारों और पुरातत्वविदों का विशेष ध्यान आकर्षित किया है। डीपाडीह के अवशेष यह प्रमाणित करते हैं कि यह क्षेत्र प्राचीन काल में धार्मिक आस्था, कला और संस्कृति का सशक्त केंद्र रहा है।

परिचय

डीपाडीह छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में स्थित एक प्रसिद्ध प्राचीन पुरातात्त्विक स्थल है, जिसे मुख्यतः अपने मंदिर अवशेषों, मूर्तिकला तथा शिलालेखीय साक्ष्यों के लिए जाना जाता है। यह स्थल अंबिकापुर से लगभग 25ए30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और प्राकृतिक दृष्टि से एक समृद्ध क्षेत्र में अवस्थित है। घने वन, नदियों की निकटता तथा उपजाऊ भूमि ने इस क्षेत्र को प्राचीन काल से ही मानव बसाहट के लिए अनुकूल बनाया।

ऐतिहासिक दृष्टि से डीपाडीह को गुप्तोत्तर काल से प्रारंभिक मध्यकाल (लगभग 7वीं से 10वीं शताब्दी ईस्वी) के बीच विकसित हुए एक महत्वपूर्ण धार्मिक एवं सांस्कृतिक केंद्र के रूप में देखा जाता है। यहाँ से प्राप्त स्थापत्य अवशेषों से यह स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में संगठित धार्मिक गतिविधियाँ प्रचलित थीं। मंदिरों के अवशेष, स्तंभ, चौखट, योनिपट्ट तथा विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियाँ तत्कालीन समाज की धार्मिक आस्थाओं को प्रतिबिंबित करती हैं।

डीपाडीह की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसकी धार्मिक बहुलता है। यहाँ शैव परंपरा का प्रभाव सर्वाधिक दिखाई देता है, किंतु इसके साथ-साथ शाक्त एवं वैष्णव परंपराओं के भी स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं। यह तथ्य प्राचीन भारतीय समाज में व्याप्त धार्मिक सहिष्णुता और समन्वय की भावना को दर्शाता है। डीपाडीह का परिचय केवल एक धार्मिक स्थल तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्थल तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का भी केंद्र रहा होगा।

डीपाडीह का अध्ययन क्षेत्रीय इतिहास को समझने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। छत्तीसगढ़ जैसे जनजातीय बहुल क्षेत्र में इस प्रकार के विकसित स्थापत्य अवशेष यह संकेत देते हैं कि यहाँ स्थानीय परंपराओं और मुख्यधारा की संस्कृति के बीच निरंतर संवाद बना रहा। इस प्रकार डीपाडीह प्राचीन भारतीय संस्कृति की बहुआयामी प्रकृति को समझने का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरता है।

डीपाडीह का भौगोलिक एवं ऐतिहासिक परिचय

डीपाडीह सरगुजा जिले के अंबिकापुर क्षेत्र के समीप स्थित है। यह क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर रहा हैए जिससे यहाँ मानव बसाहट का विकास प्रारंभिक काल से ही संभव हो सका। ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसारए डीपाडीह का विकास गुप्तोत्तर काल में विशेष रूप से हुआ। यहाँ प्राप्त अवशेष यह संकेत देते हैं कि यह स्थल 7वीं से 10वीं शताब्दी ईस्वी के मध्य एक सक्रिय धार्मिक एवं सांस्कृतिक केंद्र था।

पुरातात्त्विक साक्ष्य एवं उत्खनन

डीपाडीह से प्राप्त पुरातात्त्विक साक्ष्य इस स्थल के ऐतिहासिक महत्व को प्रमाणित करते हैं। यहाँ फैले हुए मंदिरों के भग्नावशेष यह संकेत देते हैं कि प्राचीन काल में यह एक सुव्यवस्थित धार्मिक परिसर रहा होगा। विभिन्न आकार.प्रकार के पत्थरए अलंकृत स्तंभए मूर्तिखंड तथा स्थापत्य अवयव आज भी स्थल पर बिखरे हुए पाए जाते हैं।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण तथा छत्तीसगढ़ राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा किए गए सर्वेक्षणों से यह ज्ञात होता है कि डीपाडीह में एक से अधिक मंदिरों का अस्तित्व रहा है। इन मंदिरों का निर्माण बलुआ पत्थर से किया गया था और उन पर की गई नक्काशी अत्यंत सूक्ष्म एवं कलात्मक है। मूर्तियों में शिवए पार्वतीए गणेशए विष्णु तथा विभिन्न देवी.देवताओं के रूप स्पष्ट रूप से पहचाने जा सकते हैं।

डीपाडीह से प्राप्त शिलालेखीय साक्ष्य सीमित होने के बावजूद अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ये शिलालेख तत्कालीन शासकोंए धार्मिक दानदाताओं तथा सामाजिक संरचना के विषय में संकेत प्रदान करते हैं। उत्खनन एवं सर्वेक्षण से यह भी अनुमान लगाया जाता है कि डीपाडीह केवल एक धार्मिक स्थल ही नहींए बल्कि उससे संबंधित आवासीय एवं सामाजिक संरचनाएँ भी यहाँ विद्यमान रही होंगी।

स्थापत्य कला का अध्ययन

डीपाडीह की स्थापत्य कला उत्तर भारतीय नागर शैली से प्रभावित प्रतीत होती है। मंदिरों के गर्भगृहए अंतराल तथा मंडप की संरचना में संतुलन और अनुपात का विशेष ध्यान रखा गया है। यद्यपि आज अधिकांश मंदिर खंडित अवस्था में हैंए फिर भी उपलब्ध अवशेषों के आधार पर उनकी मूल संरचना की कल्पना की जा सकती है।

मूर्तिकला डीपाडीह की स्थापत्य परंपरा का एक प्रमुख अंग रही है। यहाँ की मूर्तियों में भाव.भंगिमाए अलंकरण तथा शारीरिक संतुलन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। देवी.देवताओं की प्रतिमाओं में धार्मिक आस्था के साथ.साथ सौंदर्यबोध का भी उत्कृष्ट समन्वय दिखाई देता है। यह स्थापत्य एवं मूर्तिकला तत्कालीन कारीगरों की तकनीकी दक्षता और कलात्मक दृष्टि को दर्शाती है।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व

डीपाडीह प्राचीन काल में एक प्रमुख धार्मिक केंद्र रहा है। यहाँ शैव धर्म का विशेष प्रभाव देखने को मिलता हैए साथ ही शाक्त एवं वैष्णव परंपराओं के भी प्रमाण उपलब्ध हैं। धार्मिक अनुष्ठानोंए उत्सवों तथा सामाजिक आयोजनों के माध्यम से यह स्थल स्थानीय जनजीवन का अभिन्न अंग रहा होगा।

डीपाडीह का समकालीन महत्व

वर्तमान समय में डीपाडीह एक संरक्षित पुरातात्त्विक स्थल के रूप में जाना जाता है। यह स्थल इतिहास के विद्यार्थियोंए शोधकर्ताओं तथा पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। इसके संरक्षण एवं संवर्धन से न केवल ऐतिहासिक धरोहर सुरक्षित रहेगीए बल्कि स्थानीय पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि डीपाडीह छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत का एक अमूल्य रत्न है। इसके पुरातात्त्विक अवशेषए स्थापत्य कला एवं धार्मिक महत्व प्राचीन भारतीय सभ्यता की समृद्ध परंपरा को उजागर करते हैं। भविष्य में यदि इस स्थल पर और गहन शोध एवं संरक्षण कार्य किया जाएए तो भारतीय इतिहास के अनेक अनछुए पहलुओं को समझने में सहायता मिल सकती है।

सन्दर्भ सूची

1. व्यक्तिगत अवलोकन डीपाडीह एवं मौखिक साक्षात्कार
2. वर्मा, कामता प्रसाद, छत्तीसगढ़ की स्थापत्य कला (सरगुजा जिले के संदर्भ में),संचालनालय, पुरातत्व एवं संस्कृति रायपुर, छत्तीसगढ़ प्रथम संस्करण 2010, पृ. 26
3. यदू, डॉ. हेमू, प्राचीन सरगुजा छत्तीसगढ़, प्रथम संस्करण वर्ष 2018, बी.आर. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन दिल्ली पृष्ठ 100-101
4. बहादुर,समर सरगुजा का इतिहास रू प्रागैतिहासिक से ब्रिटिश युग तक. ज्ञान गंगा पब्लिकेशन्स 1990. पृ. 59
5. पाण्डेय, योगेश्वर सरगुजा तपोवन की बहुसंख्यक पुरातन स्मृतियाँ 1994 पृ. 90
6. रायकवार, जी.एल., पुरातत्ववेत्ता द्वारा प्रस्तुत उत्खनन प्रतिवेदन वर्ष 1990-91 से ज्ञात पृ. 30।